Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 12, No. 7, July, 2025 *Impact Factor : 7.625 (IIFS)*
(An International Peer Reviewed Multidisciplinary Refereed Research Journal) *ISSN : 2393-8358*

व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 सरोज कुमार जायसवाल
सहायक आचार्य (शिक्षा संकाय), प्रो0 एच0एन0 मिश्रा कॉलेज ऑफ एजूकेशन, कानपुर (उ0प्र0)
श्वेता तिवारी
पी–एच0डी0 शोध छात्रा (शिक्षा संकाय), छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (उ0प्र0)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का शीर्षक ''व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन'' किया है। प्रत्येक विद्यार्थी का अधिगम उसकी बुद्धि लब्धि, आनुवांशिकता, वातावरण, अधिगम शैली आदि जैसे कारको से प्रभावित होता है। बालक के अधिगम को प्रभावित करने वाले कारको में अधिगम शैली प्रमुख है। अधिगम शैली बालकों के सीखने का तरीका है। प्रत्येक व्यक्ति या बालक की व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती है, जो उनकी अधिगम शैली को प्रभावित करती है। अधिगम शैली सीखने की प्रक्रिया के दौरान सूचनाओं को विभिन्न तरीके से ग्रहण करना है। छात्रों की अधिगम शैली के अनुरूप अध्ययन कराने से छात्रों को अधिगम प्रभावी व तीव्र गति से होता है। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य : व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों एवं छात्राओं की अधिगम शैली का अध्ययन करना है। इस शोध पत्र की परिकल्पना : व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। शोध की जाँच वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के माध्यम से किया गया हैं। जिसके अन्तर्गत न्यादर्श का चुनाव सम्पूर्ण समष्टि में 150 व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक विद्यार्थियों को अपने न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। निष्कर्ष के रूप में : व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

महत्वपूर्ण शब्द : व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रम, अधिगम शैली, छात्र एवं छात्राएं।

प्रस्तावना :–

शिक्षा से व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन होता है। विद्यार्थी के व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन को ही अधिगम कहा जाता है। प्रत्येक विद्यार्थी का अधिगम उसकी बुद्धि लब्धि, आनुवांशिकता, वातावरण, अधिगम शैली आदि जैसे कारको से प्रभावित होता है। बालक के अधिगम को प्रभावित करने वाले कारको में अधिगम शैली प्रमुख है। अधिगम शैली बालकों के सीखने का तरीका है। प्रत्येक व्यक्ति या बालक की व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती है, जो उनकी अधिगम शैली को प्रभावित करती है। अधिगम शैली सीखने की प्रक्रिया के दौरान सूचनाओं को विभिन्न तरीके से ग्रहण करना है। छात्रों की अधिगम शैली के अनुरूप अध्ययन कराने से छात्रों को अधिगम प्रभावी व तीव्र गति से होता है।

व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की अधिगम शैली पर उसके अकादमिक तनाव का प्रभाव भी पड़ता है। मानसिक रूप से स्वस्थ विद्यार्थी शीघ्र अधिगम कर पाता है। उसकी पसंदीदा अधिगम शैली होने पर तीव्र गति से सीखता है। यदि पसंद की अधिगम शैली न भी हो तो वह अन्य तरीकों से सीखने की कोशिश करता है।

वर्तमान समय व्यावसायिक जागरूकता का समय है, जब माता–पिता अपने बच्चों को विद्यालय भेजते है तो यह निश्चित कर लेते हैं कि बच्चे को भविष्य में क्या बनना है? किसी भी बच्चे का भविष्य, कि उसे किस दिशा में भेजना है या ले जाना है? यह उसके परिवार के सदस्यों द्वारा ही तय किया जाता है। बच्चे का बौद्धिक स्तर क्या है? उसकी रूचि क्या है? उसका रूझान किस तरफ है? तथा उसकी आन्तरिक प्रतिभा उसे किस तरफ ले जाना चाहती है? यह सब पता नहीं लगाया जाता है। बच्चे की भविष्य की दिशा बच्चे की इच्छा के अनुसार तय नहीं की जाती है। बच्चा भी माता–पिता को सीखने के प्रति लगाव होने के कारण उनकी इच्छा के विरूद्ध अपनी बौद्धिक क्षमता को नहीं थोपना चाहता। यही कारण है कि पढ़–लिख अथवा सीखने के पश्चात् जब उसको जीविका नहीं मिल जाती तब उसकी प्रतिभा व क्षमता व्यर्थ सी लगती है। वर्तमान समय की भागदौड़ व प्रतिस्पर्धा के युग में यही बालक युवा होकर निराशा के अन्धकार में निरन्तर गिरता हुआ असफलता का सामना करता रहता है। अधिगम स्तर प्राप्त कर सफल एवं उपयोगी

नागरिक निर्माण की प्रक्रिया समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप उद्देश्य निर्धारित करके एवं पाठ्यक्रम का निर्माण करके किया जाता है। पाठ्यक्रम से प्राप्त निर्देशों के क्रम में शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों एक साथ मिलकर सकारात्मक दिशा की ओर बढ़ते हैं। विडम्बना यह है कि बालक के व्यक्तिगत कौशलों को अकादमिक शिक्षा के साथ कम महत्व दिया गया है शिक्षा वही है जो मानव को उनकी अधिगम स्तर के आधार पर जीविकोपार्जन के लिए तैयार करती है। उच्च अधिगत स्तर जीविकोपार्जन एवं उत्पादन क्षमता के कला कौशलों की पहचान कर उनके उचित जीवनोपयोगी व्यावसायिक मार्गदर्शन को प्रेरित करती है तथा उन्हें सुगम बनाती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

मनुष्य की आवश्यकताओं के आधार पर ही विभिन्न व्यवसायों का विकास हुआ है। जिनमे मूलभूत आवश्यकतायें सम्मिलित हैं वहीं दूसरी ओर व्यक्ति को सफल जीवन व्यतीत करने के लिए अपने वातावरण और परिस्थितियों के साथ उनकी अधिगम शैली का होना अति आवश्यक हो जाता है। शिक्षा वह रोशनी है जो व्यक्तियों में विभिन्न क्षमता, कौशल एवं दक्षताओं को विकसित करके उनके अधिगम में सफलता का मार्ग प्रशस्त करके व्यक्तियों के अधिगम में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। छात्र विभिन्न पृष्ठभूमि जैसे कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से आते हैं। छात्र आज की प्रतिस्पर्धा के साथ खड़े होने के लिए बहुत तनाव और दबाव से गुजरते हैं, मुख्य रूप से अपने अधिगम स्तर के सहारे कैरियर निर्माण के प्रारंभिक चरण में कदम रखना चाहता है परन्तु विद्यार्थियों के मध्य तनाव, आक्रामकता, अव्यवहारिता एवं उनका सामाजिक रूप से असंवेदनशील होना भविष्य के लिए और आज के लिए एक विकराल समस्या उत्पन्न कर रहा है। इस सम्बन्ध में हम सिर्फ हाथ पर हाथ रखकर ये सब नहीं देख सकते। हमें मिलकर इस ओर विचार करने की आवश्यकता है जब तक विद्यार्थी अपनी आंतरिक तथा बाह्म योग्यताओं एवं क्षमताओं से पूर्ण परिचित नहीं होता है तब तक वह असफलता का सामना करता रहता है और इसका परिणाम यह होता है कि उनका परिश्रम, समय एवं ऊर्जा व्यर्थ हो जाती है और अंततः वे निराश हो जाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रम स्तर पर विद्यार्थियों की अधिगम शैली का अध्ययन अपेक्षाकृत अधिक उपयुक्त एवं अत्यधिक महत्वपूर्ण होगा।

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नवत् उद्देश्य हैं–

1. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का अध्ययन करना।
2. गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध में शोध व शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सम्बन्धित साहित्य

उपाध्याय मधु (2023) ने शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बच्चों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य लिंगभेद के आधार पर शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बच्चों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध कार्य में गंगानगर जिले के माध्यमिक स्तर के 640 बालक–बालिकाओं को लिया गया है। जिसमें शिक्षित महिलाओं के 320 बालक–बालिका एवं अशिक्षित महिलाओं के 320 बालक–बालिका यादृच्छिक विधि द्वारा लिये गये हैं। दत्तक संकलन हेतु के. एस. मिश्रा द्वारा निर्मित 'अधिगम शैली परीक्षण' (Learining Style Inventory, LIS & MK) हिन्दी वर्जन मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया है। दत्तों व के विश्लेषण हेतु शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण कर टी–परीक्षण सांख्यिकी का प्रयोग कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं। निष्कर्ष में पाया कि शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बच्चो की अधिगम शैली में सार्थक अन्तर पाया गया। शहरी क्षेत्र की शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बालकों की अधिगम शैली में सार्थक अन्तर पाया गया। शहरी क्षेत्र की शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं की बालिकाओं की अधिगम शैली में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बालकों की अधिगम शैली में सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं की बालिकाओं की अधिगम शैली में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

रिदवान, एच0; सुत्ररेस्ना, आई0 एवं हरयेती पी0 (2019) ने लर्नल ऑफ फिजिक्स : कॉन्फ्रेस सीरीज पर अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि शिक्षकों की शिक्षण शैली और विद्यार्थियों को सीखने की शैली में महत्वपूर्ण अन्तर है।

लामया, अलकोहेजी; अब्दुलघनी अल–हात्तामी (2018) ने लर्निंग स्टाइल परफार्मेन्स अमंग कॉलेज स्टूडेन्ट्स पर अध्ययन किया और पाया कि प्रतिभागियों ने आमतौर पर बहु–मॉडयूली शिक्षण शैली को प्राथमिकता दी जिसमें से गतिज और दृश्य शिक्षण शैली को सबसे अधिक पसंद किया गया।

हतामी, सरवेनाज (2013) ने लर्निंग स्टाइल में अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि सीखने की शैली अपने आप में एक क्षमता नहीं है, बल्कि सी की क्षमताओं का उपयोग करने का पसंदीदा तरीका है।

शोध विधि :

वर्तमान अध्ययन की शोध विधि में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग उसके उद्देश्यों व विशेषताओं को ध्यान में रखकर किया गया है। शोध समस्या का विषय ''व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन''से सम्बन्धित है।

जीव संख्या व न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध ने जीव संख्या के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य के कानपुर मण्डल के विभिन्न व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत महाविद्यालयों के छात्र–छात्राएं सम्मिलित है। तत्पश्चात शोधकर्त्री ने न्यादर्श के चयन हेतु महाविद्यालयों की सूची तैयार की। सूची निर्माण के पश्चात् शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श का चुनाव सम्पूर्ण समष्टि से व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में से 150 छात्र एवं 150 छात्राओं (कुल 300) को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया है तथा उन्हें चुनने के लिए स्तरीकृत याद्वच्छिक प्रतिदर्शन विधि (Stratified Random Sampling Method) का प्रयोग किया गया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत शोधपत्र में अधिगम शैली परीक्षण (लर्निंग स्टाइल इनवेंटरी) –के0 एस0 मिश्रा द्वारा निर्मित उपकरण का उपयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक मान का उपयोग किया है। तत्पश्चात् आंकड़ों का विश्लेषण कर व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष निकाले गये।

अध्ययन का परिसीमन :–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश राज्य के कानपुर मण्डल के विभिन्न व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् महाविद्यालयों के 300 छात्र एवं छात्राओं को प्रतिदर्श के रूप में चयन स्तरीकृत यादृच्छिकीय न्यादर्श विधि (Stratified Randon Sampling Tecnique) द्वारा लिया गया है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल बी0एड0, बी0बी0ए0 एवं डी0एल0एड0 पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल बी0एड0, बी0बी0ए0 एवं डी0एल0एड0 पाठ्यक्रमों के अन्तिम सेमेस्टर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या :–

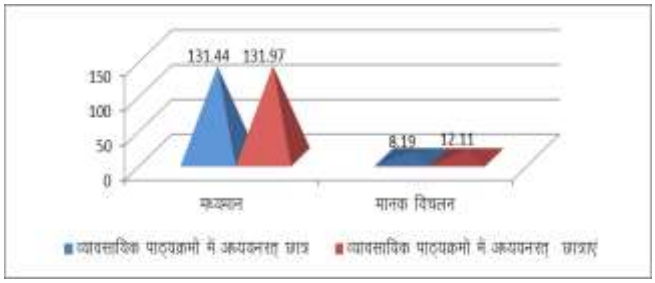
परिकल्पना संख्या–01 ''व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' का सत्यापन।

तालिका सं0–1 : व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन

क्रम सं0	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र	75	131.44	8.19	1.68	0.31	असार्थक
02	व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राएं	75	131.97	12.11			

तालिका सं0–1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की अधिगम शैली के प्राप्तांकों का मध्यमान 131.44 तथा मानक विचलन 8.19 है। जबकि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की अधिगम शैली के प्राप्तांकों का मध्यमान 131.97 तथा मानक विचलन 12.11 पाया गया। स्पष्ट है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की अधिगम शैली के प्राप्तांकों का मध्यमान, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्राओं की अधिगम शैली के प्राप्तांकों के मध्यमान से कम है। दोनों समूहों में प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए परिगणित क्रान्तिक मान 0.31 है जो कि स्वतंत्राश 148 के लिए किसी स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया है। अतः इससे सम्बन्धित शून्य परिकल्पना– ''व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' को अस्वीकृत किया जाता है।

आरेख सं0–1 : व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का तुलनात्मक आरेखीय प्रदर्शन



आरेख सं0–01 के अवलोकन से भी ज्ञात होता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की अधिगम शैली के प्राप्तांकों का मध्यमान 131.44 तथा मानक विचलन 8.19 है। जबकि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की अधिगम शैली के प्राप्तांकों का मध्यमान 131.97 तथा मानक विचलन 12.11 पाया गया।

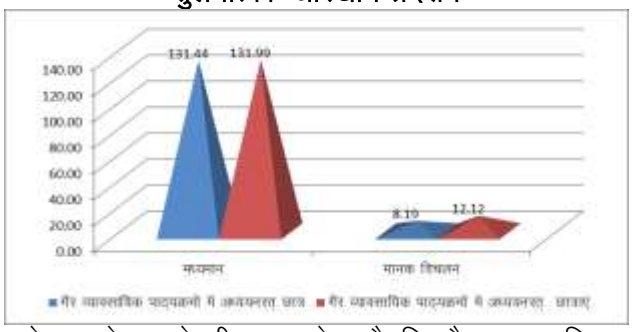
परिकल्पना संख्या–02 ''गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' का सत्यापन।

तालिका सं0–2 : गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन

क्रम सं0	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र	75	131.44	8.19	1.68	0.33	असार्थक
02	गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राएं	75	131.99	12.12			

तालिका सं0–02 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की अधिगम शैली के प्राप्तांकों का मध्यमान 131.44 तथा मानक विचलन 8.19 है। जबकि गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की अधिगम शैली के प्राप्तांकों का मध्यमान 131.99 तथा मानक विचलन 12.12 पाया गया। स्पष्ट है कि गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की अधिगम शैली के प्राप्तांकों का मध्यमान, गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की अधिगम शैली के प्राप्तांकों के मध्यमान से कम है। दोनों समूहों में प्राप्तांकों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए परिगणित क्रान्तिक मान 0.33 है जो कि स्वतंत्राश 148 के लिए किसी भी स्तर पर असार्थक पाया गया है। अतः इससे सम्बन्धित शून्य परिकल्पना–''गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' को स्वीकृत किया जाता है।

आरेख सं0–2 : गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का तुलनात्मक आरेखीय प्रदर्शन



आरेख सं0–02 के अवलोकन से भी ज्ञात होता है कि गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्रों की अधिगम शैली के प्राप्तांकों का मध्यमान 131.44 तथा मानक विचलन 8.19 है। जबकि गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्राओं की अधिगम शैली के प्राप्तांकों का मध्यमान 131.99 तथा मानक विचलन 12.12 पाया गया।

परिणाम :

व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में किसी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। दोनों समूह के मध्यमानों में जो अन्तर परिलक्षित हो रहा है वह केवल न्यादर्श त्रुटि के कारण हो सकता है। दोनों समूहों में अन्तर न होने का कारण व्यावसायिक एवं गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं में आयु के साथ–साथ व्यक्ति में परिपक्वता में भी वृद्धि आदि में समानता दृष्टिकोणित होती है। दोनों समूहों के विद्यार्थी वयस्क तथा परिपक्व होने के साथ–साथ उनकी अधिगम शैली में शिक्षा स्तर व लिंग भेद पर समान संख्या पर समानता हो सकती है।

प्रस्तुत शोध का निष्कर्ष :

1. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. गैर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ सूची :

- उपाध्याय, मधु (2023). शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं के बच्चों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन. *Innovation The Research Concept, 8(3),*5-7.
- ऊषा, भार्गव (1993). किशोर मनोविज्ञान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
- कपिल, एच.के. (2004). अनुसंधान विधियाँ, भार्गव भवन.
- गिलफोर्ड, जे.पी. (1978). फंडामेण्टल स्टेटिस्टिकस इन साइकोलोजी एंड एजुकेशन मेग्राहिल बुक कम्पनी.
- गैरिट, एच.ई. (1989). शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी. कल्याणी पब्लिशर्स.
- गुप्ता, एस.पी. (2001). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन. शारदा पुस्तक भवन.
- पाण्डेय, डॉ. के.पी.(1998). शैक्षिक अनुसंधान. विश्वविद्यालय प्रकाशन.
- भटनागर, ए.बी. एवं भटनागर., एन. (2004). शिक्षण व अधिगम का मनोविज्ञान. आर. लाल बुक डिपो.
- Hatami, S. (2013). Learning styles. *ELT Journal*, 67 (4), 488–490. *https:// doi. org/ 10. 1093/ elt/ccs083.*
- Pashler, H., McDaniel, M., Rohrer, D., & Bjork, R. (2008). Learning Styles: Concepts and Evidence. *Psychological Science in the Public Interest, 9(3), 105–119. https://doi.org/10.1111/j.1539-6053.2009.01038.x*